MP Board Class 6th Notes Sanskrit Chapter 8 परोपकारः

परोपकारः हिन्दी अनुवाद

परेषाम् उपकारः परोपकारः। सर्यः लोकहिताय तपति। नद्यः परोपकाराय वहन्ति। वृक्षाः परोपकाराय फलानि यच्छन्ति। मेघाः परोपकाराय जलं वर्षन्ति। वसुधा परोपकाराय भारं वहति। एवं प्रकृतिः परोपकाराय प्रेरयति। प्रकृत्यै वयं किं कुर्मः?

अनुवाद :
दूसरों की भलाई करना (ही) परोपकार होता है। सूर्य संसार के हित के लिए तपता है। नदियाँ परोपकार के लिए बहती हैं। वृक्ष दूसरों की भलाई के फल देते हैं। बादल दूसरों की भलाई के लिए जल को बरसाते हैं। पृथ्वी दूसरों की भलाई के लिए बोझा ढोती है। इसी तरह प्रकृति दूसरों की भलाई के लिए प्रेरणा देती है। प्रकृति के लिए हम क्या करें।

किं यूयं किञ्चित् स्मरथ यत् एषा प्रकृतिः अस्मभ्यम् अहर्निशं सर्वं सुखं ददाति। यदा प्रकृत्याः सुरक्षायै वयं मानवाः किञ्चिदपि कर्तुं शक्नुमः, तदा अस्माकं जीवन सुखकर भविष्यति। एतदर्थं जलसंरक्षणं, वायुसंरक्षणं, भूसंरक्षणम् च अवश्यमेव करणीयम्।

अनुवाद :
क्या तुम्हें कुछ याद है कि यह प्रकृति हम सब को रात
और दिन सभी सुखों को प्रदान करती है। जब प्रकृति की
सुरक्षा के लिए हम सभी मनुष्य कुछ भी करने में समर्थ होते हैं, तब हमारा जीवन सुखकर होगा। इसके लिए जल संरक्षण, वायु-संरक्षण और भू-संरक्षण अवश्य ही करना चाहिए।

माता सर्वेभ्यः भोजनं पचति। भोजनं स्वाथ्यलाभाय भवति। स्वास्थ्यं ज्ञानायं परिश्रमाय च भवति। परिवारे पिता पुत्राय विद्याधनं ददाति। माता स्वपुत्र्यै सुसंस्कारं यच्छति।

अनुवाद :
माता सबके लिए भोजन पकाती है। भोजन स्वास्थ्य के लाभ के लिए होता है। स्वास्थ्य ज्ञान के लिए और परिश्रम के लिए होता है। परिवार में पिता पुत्र के लिए विद्या और धन दे देता है। माता अपनी पुत्रियों को सुसंस्कार देती है।

सैनिकः देशसुरक्षायै स्वशरीरस्य बलिदानं करोति। जनसेवकः समाजविकासाय सततं कार्यं करोति। परिश्रमः धनार्जनाय भवति। धनं राष्ट्रविकासाय, धर्माय, सुखाय च भवति। अतः परोपकारस्य विषये कथितम्-

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः, परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
परोपकाराय दुहन्ति गावः, परोपकारार्थमिदं शरीरम्॥

अनुवाद :
सैनिक देश की सुरक्षा के लिए अपने शरीर का बलिदान करता है। जनसेवक समाज के विकास के लिए लगातार कार्य करता है। परिश्रम धन कमाने के लिए होता है। धन राष्ट्र के विकास के लिए, धर्म के लिए और सुख के लिए

होता है। इसलिए परोपकार के विषय में कहा गया है

‘दूसरों की भलाई के लिए वृक्षों पर फल लगते हैं, दूसरों की भलाई के लिए नदियाँ बहती हैं। परोपकार के लिए गायों को दुहा जाता है, परोपकार के लिए ही यह शरीर होता है।’

परोपकारः शब्दार्थाः

वहन्ति = बहती हैं। फलन्ति = फल देती हैं। पचति = पकाती हैं। मेघाः = बादल। विनीतम् = विनम्र। दुहन्ति = दूध देती है। वर्षन्ति = बरसते हैं। सततम् = निरन्तर। यच्छति = देती है, देता है। धर्माय = धर्म के लिए। धनार्जनाय = धन कमाने के लिए। प्रकृत्यै = प्रकृति के लिए। प्रकृत्याः = प्रकृति की।

https://www.evidyarthi.in/